

**विद्यार्थियों के अकादमिक अभिप्रेरणा एवं आत्म-सम्मान पर
शिक्षण संस्थान और लिंग-भेद का प्रभाव
Effects of Educational Institution and Gender on
Students Academic Motivation and Self-Esteem**

एम.फिल. उपाधि हेतु प्रस्तुत
लघु शोध-प्रबंध
सत्र- 2014-15

शोधार्थी
वीरिन्द्र कुमार पटेल
2014/05/214/005



मनोविज्ञान विभाग
(शिक्षा विद्यापीठ)

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा - 442005 (महाराष्ट्र) भारत

अनुक्रमणिका

प्रमाण पत्र

आभार

सारांशतालिकाओं एवं चित्रों की सूची

अध्याय - 1

1-14

प्रस्तावना

शोध का महत्व

शोध का उद्देश्य

शोध प्रश्न

परिकल्पना

अध्याय -2

15-16

विधि

प्रतिदर्श

उपकरण

प्रक्रिया

अध्याय - 3

17- 25

परिणाम

अध्याय - 4

26-31

व्याख्या

निष्कर्ष

शोध सीमा

परिशिष्ट

32-35

संदर्भ सूची

36-38

प्रस्तावना

अभिप्रेरणा मूलतः विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि एवं सम्मान की आवश्यकता से प्रभावित होती है, यह विद्यार्थी में आंतरिक एवं बाह्य अभिप्रेरणा के रूप में कार्य करती है और विद्यार्थी के क्रियाकलापों एवं उनकी सफलता का कारण होती है, लेकिन सभी विद्यार्थी अपनी अलग-अलग आवश्यकताओं और इच्छा स्तरों के कारण प्रभावित होते हैं। विद्यार्थी की शैक्षिक अभिप्रेरणा उसकी अपनी स्वयं की योग्यताओं, क्षमताओं एवं कौशलों में विश्वास से परिलक्षित होती है, जिसे आत्म-सम्मान के घटक के रूप में समझा जाता है। विद्यार्थी की शैक्षिक इच्छाएं और आवश्यकताएं ही अकादमिक अभिप्रेरणा हैं। यह विद्यार्थी के शैक्षिक अन्तःदृष्टि को लक्ष्योन्मुख बनाती है।

वर्तमान शैक्षिक परिवेश में अत्यधिक संख्या में विद्यार्थी अपनी 12 वीं के मार्क्स एवं ग्रेड के साथ विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा का आरंभ करते हैं। यह किसी विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने का न्यूनतम मापदंड होता है, जिसका सभी विद्यार्थी पालन करते हैं। विश्वविद्यालय शिक्षा के विभिन्न सेमेस्टर के दौरान कुछ विद्यार्थी सफल तथा कुछ असफल होते हैं। अधिकांश असफल विद्यार्थी अधिगमित निःसहायता एवं अभिप्रेरणाविहीनता के कारण इस शैक्षिक अध्ययन प्रक्रिया से बाहर हो जाते हैं। अधिकांश मामलों में छात्र की शैक्षणिक असफलता को कम बुद्धि, शैक्षिक कार्यों में असंलिप्तता तथा विभिन्न संज्ञानात्मक क्षमताओं में कमी का परिणाम मानते हैं। इस समस्यात्मक पहली का सामना अभिवावक एवं शिक्षक के साथ ही साथ विद्यार्थी को भी करना पड़ता है, क्योंकि सक्षम छात्रों के बीच असमान शैक्षणिक उपलब्धि को दर्शाता है। विद्यार्थियों के विभिन्न अकादमिक लक्ष्य को प्राप्त करने की क्षमता को विभिन्न प्रकार के चर प्रभावित करते हैं, जिसमें गैर संज्ञानात्मक कारक शैक्षणिक अभिप्रेरणा एवं सकारात्मक आत्मसम्मान महत्वपूर्ण हैं। इन कारकों के अलावा विश्वविद्यालय का प्रकार, शिक्षण का माध्यम, लिंग-भेद, पारिवारिक स्थिति, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, विद्यार्थी का पूर्व शैक्षणिक प्रदर्शन एवं अध्ययन कौशल भी शामिल हैं। इसलिए आवश्यकता है, कि इन गैर संज्ञानात्मक कारकों की जांच की जाए क्योंकि यह विद्यार्थी के अकादमिक प्रदर्शन एवं व्यवसायिक सफलता से संबन्धित होते हैं। छात्र के शैक्षणिक प्रदर्शन एवं उपलब्धि के लिए संज्ञानात्मक कारकों के साथ ही साथ भावात्मक कारकों संवेग एवं अभिप्रेरणा का भी प्रभाव पड़ता है (पियाजे, 1952)।

विद्यार्थियों का आत्म-सम्मान और अभिप्रेरणा सामान्य रूप से उच्च शिक्षा के दौरान प्रभावित होता है तथा छात्र अभिप्रेरणाशिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मुद्दा हैं। विद्यार्थियों के पेशेवर जीवन के लिए अकादमिक प्रदर्शन का विशेष

महत्व होता है। यह शोध अध्ययन शिक्षाविदों को इस विचार पर केन्द्रित कर सकता है, कि विद्यार्थियों की अधिगम के प्रति अभिवृत्ति कैसी है तथा विद्यार्थी के अधिगम व्यवहार को कौन-कौन से कारक अधिक प्रभावित करते हैं, इसके द्वारा हम यह पता कर सकते हैं कि सीखने में कौन सी प्रक्रिया अवरोध उत्पन्न करती है और कौन इसे संवर्धित करती है। अकादमिक अभिप्रेरणा शैक्षिक समुदाय को विद्यार्थी के अकादमिक प्रदर्शन की भविष्यवाणी करने में सहायता प्रदान करेगा और उन विद्यार्थियों की भी पहचान करेगा जो अकादमिक रूप से अभिप्रेरित नहीं हैं।

उच्च एवं निम्न आत्म-सम्मान विद्यार्थियों के अकादमिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक सफलता तथा उपलब्धि के विभिन्न अनुभवों में सम्मिलित होती है। वर्तमान शोध अध्ययन इस समस्या की भी व्याख्या करता है कि कैसे आत्म-सम्मान से संबन्धित समस्याएँ एवं कारक विद्यार्थी के शैक्षिक प्रदर्शन एवं सफलता को प्रभावित कर सकती हैं। आत्म-सम्मान जब अधिक निम्न होता है, तो विद्यार्थी के शैक्षिक परिपेक्ष्य में अकादमिक असफलता, आलोचना, अस्वीकृति, चिंता, एवं अवसाद जैसे लक्षण प्रदर्शित होने लगते हैं। जिसे अधिगमित निःसहायता और शैक्षणिक पलायन (ड्रॉपआउट) का महत्वपूर्ण संकेतक माना जाता है। आत्म-सम्मान विद्यार्थी के शैक्षिक विश्वास स्तर को व्यवस्थित एवं सुसंगठित करता है, तथा यह विद्यार्थी में अच्छे प्रदर्शन की इच्छा को उत्प्रेरित करता है।

सकारात्मक एवं उच्च आत्म-सम्मान विद्यार्थी के वैयक्तिक अभिप्रेरण शक्ति को संवर्धित एवं परिवर्तित करता है जो लक्ष्य की प्राप्ति को व्यवस्थित और सुदृढ़ करता है, अर्थात् बढ़ाता है। विद्यार्थी जब अपने अकादमिक लक्ष्य को सम्मानपूर्वक प्राप्त कर लेता है तो वह शैक्षिक गतिविधियों में अधिक अभिप्रेरित एवं जुड़ाव महसूस करता है। अकादमिक अभिप्रेरणा विद्यार्थी के शैक्षणिक व्यवहार एवं संज्ञम को प्रभावित करता है, शैक्षणिक अभिप्रेरणा विद्यार्थी के व्यवहार को लक्ष्य निर्देशित करता है। क्योंकि मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि मानव का स्वभाव उद्देश्यपूर्ण होता है, जिसमें विद्यार्थी अपने लिए एक शैक्षिक लक्ष्य का चुनाव करता है और उसे प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहता है। अकादमिक अभिप्रेरणा विद्यार्थी के अधिगम प्रक्रिया से संबन्धित विशिष्ट लक्ष्य के प्रति उसकी अनुक्रिया को बनाए रखता है। शैक्षिक गतिविधियों में अकादमिक अभिप्रेरणा विद्यार्थियों के प्रदर्शन को उन्नत करता है, तथा यह विद्यार्थियों के उच्च शैक्षिक उपलब्धि के लिए महत्वपूर्ण होती है। जो विद्यार्थी उच्च रूप से अभिप्रेरित होते हैं उनके शैक्षिक उपलब्धि एवं सफलता की संभावना ज्यादा होती है।

अकादमिक अभिप्रेरणा, विद्यार्थी की एक मानसिक एवं सांवेगिक स्थिति है जो विद्यार्थी को शैक्षिक कार्यों तथा गतिविधियों के प्रति अनुक्रिया करने के लिए उत्तेजित और प्रेरित करती है, **(डेसी एवं रेयान, 2001)**। शैक्षणिक

अभिप्रेरणा एक प्रकार की क्षमता और योग्यता हैं, जो किसी विषय के बारे जानने एवं समझने के सामान्य अनुभव से प्राप्त की जा सकती हैं। लेकिन अधिकांश विद्यार्थी इसे स्व की इच्छा आवश्यकता, अपेक्षा, लक्ष्य, एवं मॉडलिंग प्रत्यक्षण के आधार पर इसका अनुभव करते हैं। अकादमिक अभिप्रेरणा विद्यार्थी की वह इच्छा है जो किसी शैक्षिक विषय के बारे में उसके दृष्टिकोण, दृढ़ता एवं अभिरुचि के स्तर से प्रदर्शित होती है, जिसको विद्यार्थी के क्षमता के रूप में शैक्षिक सफलता एवं उत्कृष्ट प्रदर्शन का मानक माना जाता है, **ब्रोफी(1998)**. शैक्षिक अभिप्रेरणा प्रभावी प्रेरणा का सामान्य प्रकार है, जिसको शैक्षिक वातावरण के साथ कार्य करने में सफल या प्रभावी होने इच्छा के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। अधिकांश विद्यार्थी शिक्षा के दौरान योग्यता, क्षमता, और कौशल की वैश्विक भावना को सीखते हैं एवं अधिगम में अभिरुचि तथा प्रेरणा को सम्मिलित करते हैं। विद्यालय के शैक्षिक वातावरण में विद्यार्थी अकादमिक लक्ष्यों, मूल्यों एवं विश्वासों का अधिक विभेदित और जटिल सेट विकसित करना प्रारम्भ करते हैं जो उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करती है, **पारकरसन (1999,2006) एवं एकेल्स (1983)**.

विद्यार्थियों की अकादमिक अभिप्रेरणा शिक्षा के दौरान बदलती है युवा विद्यार्थी अपने व्यक्तिगत आशावादी दृष्टिकोण एवं लक्ष्यों के साथ उच्च शिक्षा में प्रवेश करते हैं और पेशेवर जीवन के लिए आमतौर पर वे सीखने एवं समझने के लिए सकारात्मक रूप से अभिप्रेरित और उत्तेजित रहते हैं। शैक्षिक अभिप्रेरणा शैक्षिक क्रियाकलापो एवं उसमें प्राप्त सफलता से संबन्धित व्यवहार के कारणों को मूल्यांकित करता है, कि अभिप्रेरित शैक्षिक व्यवहार को विद्यार्थी क्यों और कैसे कर रहे हैं। इस अर्थ में अकादमिक अभिप्रेरणा वह तत्व है जो सीखने की प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थियों की मनोवृत्ति एवं अभिवृत्ति को दर्शाता है, **राबर्ट.जे. वालरैण्ड (1992),पेलिटियर एवं वेलिस (1999)**. अकादमिक अभिप्रेरणा मुख्यतः तीन भागों में विभाजित होती है।

आंतरिक अभिप्रेरणा, में विद्यार्थी अधिगम की प्रक्रिया में स्वयं को सम्मिलित कर लेता है वह शैक्षिक गतिविधियों को अपनी खुशी, अभिरुचि एवं आनंद के लिए करता है। विद्यार्थी सीखने की प्रक्रिया को व्यक्तिगत लक्ष्यों के रूप में देखता है, और स्वयं के शिक्षार्थी कौशलों को प्राप्त करना चाहता है, **(सिंह,1970)**. आंतरिक अभिप्रेरणा से तात्पर्य किसी एक शैक्षिक गतिविधि या क्रियाकलाप में विशुद्ध रूप से अपनी जिज्ञासा के लिए भाग लेना जिससे की हमें किसी वस्तु के बारे में नई जानकारी प्राप्त होगी। अपनी स्वयं की इच्छा के लिए किसी गतिविधि में सम्मिलित होना एवं उससे संबंधित कार्यों को खुशी एवं आनंद के साथ पूर्ण करना और प्रक्रिया में अपना समग्र योगदान करने की इच्छा महत्वपूर्ण होती है जिससे उसे संतोष की प्राप्ति होती है, **(डेसी एवं रेयान, 2011)**. विद्यार्थी के शैक्षणिक सफलता एवं विकास के

लिए दृढ़ता एवं प्रयास जो कि आंतरिक अभिप्रेरणा से संबंधित होते हैं अत्यंत ही आवश्यक होता है। आंतरिक अभिप्रेरणा से प्रेरित विद्यार्थी अपने अकादमिक लक्ष्यों का विकास करता है। जैसे किसी शैक्षिक लक्ष्य को कैसे सीखा जाए, एवं उसमें कैसे सफलता प्राप्त की जाए। आंतरिक अभिप्रेरणा छात्र के उपलब्धि अभिप्रेरणा को बढ़ाती है। किसी विषयगत जानकारी को हासिल करने की इच्छा विद्यार्थी का महत्वपूर्ण लक्ष्य होता है। यह योग्यता प्रभावी शिक्षण रणनीतियों एवं विद्यालयों के प्रति सकारात्मक दृष्टि से सहसंबंधित होती हैं, **(गार्सिया एवं प्रेंटिक, 1996)**।

आंतरिक अभिप्रेरणा में विद्यार्थी की क्षमता एवं आत्मनिर्धारण की आवश्यकता महत्वपूर्ण होती है। आंतरिक अभिप्रेरणा विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता, महारत उन्मुखीकरण, कुशलता, विशुद्ध चिंतन, शैक्षिक सामर्थ्य, प्रगतिशील विचारधारा, योजनापूर्ण सतर्कता एवं सूचनाओं से अच्छी तरह वाकिफ होने के कौशल एवं योग्यता में विस्तार करती है। आंतरिक अभिप्रेरणा को उपलब्धि अभिप्रेरणा की आवश्यकता के रूप में भी परिभाषित किया गया है, जो विद्यार्थी को परिपक्व, सशक्त, मजबूत एवं प्रभावी बनाता है। जिसके द्वारा विद्यार्थी स्वतंत्र और आत्मगत बौद्धिक क्षमता के अनुसार अपना निर्णय ले सके। आंतरिक अभिप्रेरणा के तीन प्रकार होते हैं।

जानने और समझने की आंतरिक अभिप्रेरणा, इस आंतरिक अभिप्रेरणा की आवश्यकता मानव में जन्मजात होती है जो योग्यता, क्षमता एवं स्वनिर्णय के द्वारा जागृत होती है। इसमें व्यक्ति अपने व्यक्तिगत अनुभव के लिए कोई अनुक्रिया करता है, और पूर्ण स्वतंत्रता सम्मिलित होती है। वह इसे बार-बार एवं स्वायत्तशासित तरीके से करता है। आंतरिक अभिप्रेरणा विद्यार्थी की अंतर्दृष्टि का विकास करता है। विद्यालय को जो छात्र सकारात्मक मूल्य देते हैं और अपने अधिगम को उद्देश्य के रूप में प्रत्यक्षित करते हैं, उनमें अधिक क्षमता, योग्यता, विश्वास, सकारात्मक स्वभाव, आत्म संचालन परिलक्षित होता है।

इस प्रकार के आंतरिक अभिप्रेरणा का अध्ययन शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में अधिक हुआ है। यह विद्यार्थी के अधिगम संप्रत्यय से संबंधित होता है। जैसे जिज्ञासा, निरंतरता, शैक्षिक खोज, अधिगम लक्ष्य, आंतरिक बुद्धिमत्ता या सांवेगिक बुद्धि सम्मिलित होती है, **(गॉट फ्रायड 1985 एवं हार्टर 1981)**। इसमें जानने और समझने की आवश्यकता महत्वपूर्ण होती है। जिसके द्वारा विषयगत अर्थ को खोजा जाता है। इस प्रकार के अभिप्रेरणा द्वारा विद्यार्थी किसी शैक्षिक क्रिया-कलाप को अपनी इच्छा, खुशी तथा संतोष के लिए करता है और अधिगम कार्यों के लिए हमेशा तत्पर रहता है। जैसे कोई विद्यार्थी किसी पुस्तक को इसलिए पढ़ता है कि इससे उसे नई जानकारी मिलेगी और उसे आनंद का अनुभव होगा।

उपलब्धि को अनुभव करने की आंतरिक अभिप्रेरणा, इस आंतरिक अभिप्रेरणा का अध्ययन विकासात्मक मनोविज्ञान के साथ-साथ शैक्षिक अनुसंधान के संप्रत्यय जैसे निपुणता अभिप्रेरणा में अधिक हुआ है। इसमें विद्यार्थी वातावरण के साथ अनुक्रिया करता है, जिससे वह अपनी क्षमता एवं अनुभव द्वारा कुछ नया करने में सफलता प्राप्त करता है। वह शैक्षिक प्रक्रिया पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है, क्योंकि वह केवल ज्ञान प्राप्त करना ही नहीं चाहता है बल्कि उस पर उपलब्धि हासिल करना चाहता है। इस उपलब्धि अभिप्रेरणा को 'अब्रेला संप्रत्यय' के रूप में देखा जाता है। जैसे छात्र अपने शैक्षिक पेपर के कार्य में आवश्यकता से अधिक कार्य करता है, क्योंकि वह कुछ नया प्राप्त करना चाहता है और जो उसके आंतरिक अभिप्रेरणा को संतुष्ट करती है, **(डिसी एवं रेयान 1985, 1991)**।

उत्तेजना को अनुभव करने की आंतरिक अभिप्रेरणा, विद्यार्थी शैक्षिक कार्य करते समय या उसमें भाग लेते समय विभिन्न तरह के सकारात्मक संवेग एवं संवेदना का अनुभव करता है। जैसे विद्यार्थी शैक्षिक वातावरण एवं कक्षा के अध्ययन के दौरान उसमें सांवेगिक आनंद सौंदर्यबोध के साथ ही साथ मौजमस्ती और उत्तेजना का अनुभव करता है, उसे इस आंतरिक अभिप्रेरणा की अनुभूति होती है।

बाह्य अभिप्रेरणा, से तात्पर्य उन अभिप्रेरकों से है जो विद्यार्थी के शैक्षिक व्यवहार को बाह्य रूप से प्रभावित करते हैं। इस व्यवहार का कारण विद्यार्थी की स्वयं की आवश्यकता नहीं होती है। यदि एक विद्यार्थी परीक्षा में कड़ी मेहनत इसलिए करता है कि परिणाम में उसे पुरस्कार या अनुमोदन मिले। इस शैक्षिक उपलब्धि के पीछे ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। इसमें सीखने के लिए जानकारी प्राप्त करना एक शर्त है। लेकिन अक्सर विद्यार्थी इसे पुरस्कार, सामाजिक स्वीकृति, शक्ति प्रदर्शन एवं नेतृत्व के रूप में स्वीकार करते हैं, **(जिम्मरमैन , 1989)**।

शैक्षिक अध्ययन में बाह्य प्रोत्साहन भी विद्यार्थी के आंतरिक अभिप्रेरणा में कमी लाता है। शोधकर्ता ने ऐसे बाह्य कारकों का अध्ययन किया जिसमें पारिवारिक उम्मीदें, शिक्षक की अपेक्षा, धन और सहकर्मी के द्वारा स्वीकृति की भावना महत्वपूर्ण होती है। यह सभी कारक दूसरों को अपनी क्षमता व्यक्त करने के लिए होता है। बाह्य अभिप्रेरित विद्यार्थी अपनी क्षमता का प्रदर्शन एवं उसके प्रभाव को दिखाते हैं। जबकि आंतरिक अभिप्रेरित विद्यार्थी अपनी शैक्षिक क्षमता एवं कौशल में सुधार करते हैं। जिससे वह भविष्य में अधिक बेहतर और सक्षम बन सके। अन्य कारकों में आवश्यकता के अनुसार इसे व्याख्यायित किया जा सकता है। जिसमें शक्ति अभिप्रेरणा और असफलता का भय है। कॉलेज की शैक्षिक परिस्थिति में अक्सर शक्ति अभिप्रेरणा को विद्यार्थी के बाह्य अभिप्रेरणा के रूप में देखा जाता है। वह छात्र जो शक्ति अभिप्रेरण से प्रभावित होता है। वह शैक्षिक वातावरण को नियंत्रित करने की जरूरत महसूस करता है। दूसरे को अपनी

क्षमता के प्रदर्शन के लिए भी वह इसे सबसे अच्छा तरीका मानते हैं, **(मैकलिलैंड एवं स्टिली, 1973)**. कथित शैक्षिक योग्यता विद्यार्थी के स्वायत्त शैक्षिक प्रेरणा में सीधे तौर पर सम्मिलित होती है जो शैक्षिक प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

असफलता का भय निरोधात्मक है। इसे स्थिति से अलगाव के दृष्टिकोण से समझा जा सकता है। विफलता से बचने का मकसद एक सामान्य स्वभाव एवं अनुभव है। शैक्षिक उपलब्धि कार्य में विफलता विद्यार्थी में शर्म, परेशानी एवं चिंता उत्पन्न करती है। विफलता से बचने के लिए एक ही रास्ता उपलब्धि कार्यों से बचना है। अलगाव व्यवहार को आंतरिक अभिप्रेरणा के अभाव के रूप में देखा जाता है, **(फोर्टियर और वालरैण्ड, 1995)**.

बाह्य अभिप्रेरणा से तात्पर्य कुछ पुरस्कार प्राप्त करने, सजा से बचने और कभी-कभी अच्छे ग्रेड एवं अध्यापक से अनुमोदन प्राप्त करने के लिए भी होता है। अच्छे विद्यार्थी के रूप में प्रदर्शित होने के लिए भी बाह्य अभिप्रेरणा कार्य करती है। बाह्य रूप से अभिप्रेरित विद्यार्थी शैक्षणिक कार्य के लिए खुद को मजबूर महसूस करता है और हमेशा अधिकतम प्रशंसा प्राप्त करने के लिए कम प्रयास करना चाहता है। बाह्य अभिप्रेरित विद्यार्थी वह है जो यह चाहता है कि उसके शैक्षिक उपलब्धियों को सार्वजनिक रूप से मान्यता मिले, **(लिपर 1988, ब्रुक्स एवं अन्य 1998, चेम्बर्स 1999)**। बाह्य अभिप्रेरणा के तीन प्रकार होते हैं।

पहचान प्राप्त करने की बाह्य अभिप्रेरणा, अपने शैक्षिक कार्यों के लिए विद्यार्थी अपनी योग्यताओं को आंतरिक रूप से मूल्य देते हैं एवं उसी के अनुरूप शैक्षिक कार्यों को नियमित और संयोजित करते हैं।

आंतरिक रूप से उत्तप्रेरित होने की बाह्य अभिप्रेरणा, विद्यार्थी अपने स्व को बाहरी दबाव की वजह से स्वनिर्धारित करता है। इसमें विद्यार्थी सामाजिक दबाव, शर्म से बचने के लिए एवं चिंता जो उसके अहम की प्रभावशीलता को कम करती है, के लिये अधिगम करता है।

बाह्य रूप से विनियमित होने की बाह्य अभिप्रेरणा- विद्यार्थी जब अपने शैक्षिक व्यवहार को बाह्य स्रोत के आधार पर निर्धारित करता है। जैसे पुरस्कार और सजा से बचने के लिए शैक्षिक अधिगम करना। विद्यार्थी किसी शैक्षिक प्रक्रिया में इसलिए भाग लेता है, कि उस शैक्षिक प्रक्रिया पर उसका नियंत्रण हो, जिससे उसे गर्व का अनुभव होता है। लेकिन इस बाह्य अभिप्रेरणा में विद्यार्थी का शैक्षिक दशाओं पर कोई नियंत्रण नहीं होता है।

अभिप्रेरणाविहीन, से तात्पर्य सीखने के लिए कोई अभिप्रेरणा नहीं है के रूप में किया जाता है। यह शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थी की लाचारी, विवशता, अक्षमता एवं निःसहायता को दर्शाती है। विद्यार्थी अभिप्रेरणाविहीनता को उस समय अनुभव करता है। जब वह अपनी अनुक्रिया और परिणाम के बीच की प्रत्याशा को प्रत्यक्षिकृत नहीं कर पाता है। यह आत्मनिर्धारित व्यवहार के बिल्कुल विपरीत व्यवहार है, शैक्षिक गतिविधियों में निम्न प्रतिनिधित्व अक्षमता एवं उद्देश्य की अनुपस्थिति तथा परिस्थितियों पर नियंत्रण की कमी अभिप्रेरणाविहीनता को दर्शाता है। इसमें विद्यार्थी अधिगमित निःसहायता की स्थिति का सामना करता है, **अहमद और बुनसिम (2006)**.

आत्म-सम्मान, सामान्य रूप से किसी महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यक्तिगत योग्यता एवं क्षमता के विश्वास से परिलक्षित होता है। जिन विद्यार्थियों में उच्च शैक्षणिक आत्म-सम्मान होता है, वे आंतरिक रूप से अधिक अभिप्रेरित होते हैं तथा अपने शैक्षिक चुनौतियों का सामना अधिक सफलता पूर्वक करता है। आत्म-सामर्थ्य, आत्म-विश्वास के रूप में विद्यार्थी में प्रदर्शित होता है। यह विद्यार्थी को उनके विशिष्ट कार्यों को पूर्ण करने में उच्च कार्य क्षमता प्रदान करती है। वे अपनी असफलता के लिए कभी भी बाह्य कारकों पर आक्षेप नहीं करते हैं, और यह अनुभव करते हैं कि परिस्थितियाँ उनके नियंत्रण में हैं। आत्म-सामर्थ्यवित विद्यार्थी अपनी सफलताओं से बहुत जल्दी ही स्थिर हो जाते हैं और व्यक्तिगत लक्ष्यों को सफलता पूर्वक हासिल कर लेते हैं। वही दूसरी तरफ जिन विद्यार्थियों में कम आत्म-सम्मान पाया जाता है वे अपने लक्ष्यों को सफलतापूर्वक हासिल नहीं कर पाते हैं, जिससे उनके आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचती है और शैक्षिक कार्यों से संबन्धित चुनौतियों से भयभीत होने लगते हैं। वे विद्यार्थी जो कम आत्म-सम्मान रखते हैं उनमें आकांक्षा का स्तर निम्न होता है। जिसके कारण वे शैक्षिक कार्यों में असफलता प्राप्त होने पर जल्द ही निराश हो जाते हैं। और यह आत्म-परिपूर्ण फीडबैक चक्र के रूप में निरंतर चलता रहता है, **(बन्दुरा, ए. 1997; मार्गालिस एवं मैकोबी, 2006)**.

इस प्रकार जिन विद्यार्थियों में उच्च आत्म-सम्मान होता है, वह विद्यार्थी हमेशा सफल होंगे ऐसा आवश्यक नहीं है। इसका तात्पर्य केवल यह है, कि विद्यार्थी अपनी क्षमताओं में मजबूत और पूर्ण विश्वास रखता है। विद्यार्थी में जब अपनी शक्तियों एवं कौशलों में विश्वास रखते हैं, तो वे कार्यों को अच्छी तरीके से कर पाते हैं। विद्यार्थी ऐसा विश्वास करते हैं कि अन्य कारक भी उनकी सफलता में योगदान करते हैं वे कठिनाइयों का सामना करते हैं और उसमें कठिन मेहनत करके उसपर सफलता प्राप्त करते हैं, **(एकेल्स, 2000)**.

आत्म-सम्माननिम्न महत्वपूर्ण तत्वों द्वारा प्रदर्शित होती है। विद्यार्थियों द्वारा कार्यों का चुनाव, कार्यकारी क्षमता की मात्रा प्रतिबन्धता को परिपूर्ण करने के लिए चुनौतियों एवं कठिनाइयों की सामना करने की निरंतरता और लक्ष्यों

को निर्धारित करने की कठिनाई महत्वपूर्ण होती हैं। जिन विद्यार्थियों में कम मात्रा में आत्म-सम्मान होता है, उनमें आत्म-विश्वास बिल्कुल नहीं होता है, कि वे किसी लक्ष्य को अपनी क्षमता की आधार पर प्राप्त कर सकते हैं। चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी अनुकूल क्यों न हों। उनकी लक्ष्य के प्रति कोई प्रत्याशा नहीं होती है। वे ऐसा विश्वास करते हैं कि वे किसी भी कार्य को अच्छी तरह से पूर्ण नहीं कर सकते हैं। इसीलिए वे निरंतर इस संबंध में कोई प्रयास नहीं करते हैं, **(फाइसेल एवं शील, 2005)**।

आत्म-सम्मान की भूमिका, सामान्यतः सभी व्यक्ति सफलता प्राप्त करने के लिए उन्नत हो रहे हैं, वे लक्ष्यों को पहचानते हैं, उसका निर्धारण करते हैं तथा उसमें उपलब्धि प्राप्त करते हैं। यद्यपि अधिकांश व्यक्ति ऐसा अनुभव करते हैं कि लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जो योजना बनाई गयी है वह कार्यों में सफल होने के लिए बहुत आसान नहीं है। **बन्दुरा, ए. (1997)** ने ऐसा पाया है कि किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किन चुनौतियों एवं परिपेक्ष्यों का सामना करना होगा इसके निर्धारण में व्यक्ति के आत्म-सम्मान की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

आत्म-सम्मान की मजबूत समझ, जिन व्यक्तियों में उच्च आत्म-सम्मान पाया जाता है वे समस्याओं का समाधान चुनौतीपूर्ण तरीके से करते हैं और उसे करने में पारंगत भी हो जाते हैं। किसी अनुक्रिया में भाग लेते समय वे अत्यधिक गहरी रुचि लेते हैं और उस अनुक्रिया में सबसे पहले उपलब्धि प्राप्त करते हैं। वे प्रतिबन्धता की मजबूत समझ रखते हैं और अनुक्रियाओं को पुरस्कार के रूप में लेते हैं। वे असफलता एवं निराशा से बहुत ही कम समय में रिकवरी कर लेते हैं। समस्याओं को हल करने के लिए रचनात्मक और प्रयोगधर्मी दृष्टिकोण का विकास करना। विद्यार्थी विभिन्न विधियों के द्वारा समस्या का समाधान करते हैं। चुनौतियों को स्वीकार करना तथा उसका सामना करने के लिए विकल्पों का निर्माण करने में आत्म-सम्मान सहायता करता है।

आत्म-सम्मान की कमजोर समझ, जिन व्यक्तियों में कम आत्म-सम्मान होता है वे चुनौतीपूर्ण कार्यों को करने से दूर भागते हैं। वे ऐसा विश्वास करते हैं कि कठिन कार्य की परिस्थितियाँ उनके क्षमताओं के बाहर की चीज है। वे केवल अपनी व्यक्तिगत असफलता को नकारात्मक प्राप्ति के रूप में देखते हैं। वे अपनी व्यक्तिगत क्षमताओं में बहुत ही जल्दी आत्म-विश्वास को खो देते हैं।

आत्म-सम्मान, से आशय व्यक्ति के अपने स्वयं के बारे में कैसे अभिवृत्ति है से होता है। जिसमें सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों को आत्म मूल्यांकन सम्मिलित होता है। सामान्यतः आत्म-सम्मान को व्यक्ति के पूर्णतः सकारात्मक आत्म मूल्यांकन के रूप में परिभाषित किया जाता है। आत्म-सम्मान को वैयक्तिक शील गुण विशेषता के तौर पर देखा

जाता है। कि व्यक्ति का व्यक्तित्व कितना स्थिर और स्थायी है। आत्म-सम्मानमें अपने स्व के प्रति विभिन्न विश्वास सम्मिलित होते हैं। जैसे मैं योग्य हूं, मैं सक्षम हूं और कुछ संवेगों जैसे आत्म विश्वास, आत्म गौरव, विजय, निराशा, अभिमान और शर्म के रूप में प्रदर्शित होती है। मनोविज्ञान में आत्म-सम्मानको व्यक्ति की स्व अवधारणा के रूप में देखा जाता है। जिसमें हम अपने स्व के बारे में क्या विचार रखते हैं। जैसे हम अपने बारे में कैसा अनुभव करते हैं। अर्थात् हमारे जीवन जीने के सही अनुभव एवं आवश्यकताएं ही आत्म-सम्मानहै। अपनी क्षमताओं, कौशलों के बारे में चिंतन करना और जीवन के विभिन्न चुनौतियों को अपनी योग्यताओं के अनुसार मुकाबला करना। आत्म-सम्मानमानव की शक्तिशाली एवं आधारभूत आवश्यकता है। अपने स्व के सामर्थ्य और क्षमता के बारे में विश्वास रखना एवं अपने स्व को मूल्य देना, जो जीवन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

व्यक्ति का अपनी योग्यताओं का संपूर्ण आत्मनिष्ठ सांवेगिक मूल्यांकन ही आत्म-सम्मानको प्रदर्शित करता है। आत्म-सम्मान अपने स्व के प्रति निर्णय होता है। इसके साथ ही साथ इसमें अपने स्व के प्रति मनोवृत्ति भी सम्मिलित होती है। अर्थात् आत्म-सम्मान एक तरह का विश्वास है। सामान्यतः यह दो महत्वपूर्ण पक्षों से मिल कर बना होता है। क्षमता और योग्यता। इसका क्षमता वाला भाग अर्थात् सामर्थ्य आधारित आत्म-सम्मान जिसका आशय व्यक्ति की उस सीमा से है जिसमें वह किसी लक्ष्य आवश्यकता को पाने के प्रति कितना क्षमता, सामर्थ्य और शक्ति रखता है। जबकि योग्यता वाला भाग अर्थात् पात्रता आधारित आत्म-सम्मानसे तात्पर्य व्यक्ति के अनुभव की उस सीमा से है जिसमें अपने स्व को कितना मूल्यवान मानता है। **विलियम जेम्स ने (1860, 1983)** में 'प्रिंसिपल ऑफ साइकोलॉजी' में आत्म-सम्मानको व्यक्ति के समस्त वैयक्तिक सफलता के रूप में विभाजित किया है, कि वह अपने स्व के उपलब्धि के बारे में क्या सोचते हैं। आत्म-सम्मान प्रमुख रूप से अधिक महत्वपूर्ण सफलता के द्वारा प्राप्त किया जाता है एवं असफलता से बचकर इसे जीवन में बनाए रखा जा सकता है। सामान्य और स्वस्थ आत्म विकास का मूल्य जीवन के लिए परम आवश्यक है। आत्म-सम्मान व्यक्ति के स्वयं के अनुभव पर आधारित विचार, संवेदनाएं और अनुक्रिया होता है।

मैस्लो ने आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत में आत्म-सम्मानकी आवश्यकता की व्याख्या की है। इनके अनुसार आत्म-सम्मानको व्यक्ति के सकारात्मक एवं नकारात्मक आत्म मूल्यांकन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जिसमें उन्होंने दो महत्वपूर्ण तत्वों की चर्चा की है। स्व के प्रति सम्मान- जिसमें आत्म प्रेम, आत्म विश्वास, आत्म गौरव, क्षमता, कौशल एवं अभिवृत्ति प्रमुख है। इसके अतिरिक्त सम्मान और आदर जो हमें दूसरों से प्राप्त होता है। सामान्य रूप से

आत्म-सम्मानको आत्म संप्रत्य का मूल्यांकित तत्व माना जाता है। यह स्व का एक प्रमुख एवं वृहद भाग है। जो व्यक्ति के संज्ञानात्मक, व्यवहारात्मक एवं आत्म मूल्यांकन को प्रभावित करता है, **रोजेनबर्ग (1965)**.

समाज के द्वारा बनाये गये मानक मूल्य से व्यक्ति अपने स्व को पहचानता है। उसके बारे में निर्णय लेता है। साथ-साथ अपने स्व के अनुभव एवं संवेगों को परिस्थितियों के अनुकूल बनाए रखता है। अर्थात् आत्म-सम्मानस्व मूल्यांकन की एक प्रक्रिया है। जो मानव व्यवहार का एक केंद्रीय भाग है। यह मानव की चिंतन प्रक्रिया, संवेगों, इच्छाओं, मूल्यों और लक्ष्यों को प्रभावित करती है। ब्रेन्डेन का मानना है कि आत्म-सम्मानदो स्तंभों पर आधारित होता है। क्षमता और योग्यता। आत्म-सम्मानका विकास जीवन जीने की क्षमता एवं जीवन को अच्छे तरीके से निर्वाह करने की योग्यता के समन्वय से होता है, **ब्रेन्डेन (1969)**.

शैक्षणिक आत्म-सम्मानमें छात्र शैक्षिक चुनौतियों का अपनी योग्यता एवं कौशलों के अनुरूप सकारात्मक मूल्यांकन करता है। जो उसके शैक्षिक सफलता को उत्साहपूर्वक पाने में सहायता करता है। इन्होंने आत्म-सम्मानको स्व प्रत्यक्षण पहचान के रूप में विद्यार्थी की क्षमता के रूप में निर्धारित किया है। आत्म-सम्मानआत्म संप्रत्यय के उन पाँच परिप्रेक्ष्यों में प्रमुख संप्रत्यय है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी स्व की क्षमता का मूल्यांकन करता है। **इरिक्सन** आत्म-सम्मानको विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक प्रमुख जैविक तत्व के रूप में मानते हैं, जो विद्यार्थी को एक स्वस्थ आत्म चरित्र निर्माण में मदद करती है। यह अनुभवों के आधार पर क्षमताओं के विकास के द्वारा शैक्षिक चुनौतियों से लड़ने एवं उनका मूल्यांकन करने, उन्हें स्वीकार करने के साथ ही साथ प्रसन्नता की अनुभूति कराता है। अकादमिक आत्म-सम्मानऔर अकादमिकआत्म-संप्रत्यय प्रमुख रूप से यह सुविधा प्रदान करते हैं कि कैसे विद्यार्थी अपनी शैक्षिक क्षमता का प्रत्यक्षण करता है, विशेषकर जब उसकी तुलना दूसरे छात्रों से शैक्षिक परिदृश्य में की जाती है, **इरिक्सन (1968)**.

एलेक्जेंडर (2001) के अनुसार आत्म-सम्मानका व्यक्ति की क्षमता एवं प्रतिभा परिप्रेक्ष्य के रूप में पहचाना जा सकता है। यह उच्चतर मानसिक स्वास्थ्य बोध का महत्वपूर्ण संकेतक होता है। यह परिवर्तन को अपनाने के लिए पूर्णतः स्वतंत्र होता है। आत्म-सम्मानके केंद्र में अपने स्व के प्रति बिना शर्त सराहना एवं प्रोत्साहन शामिल होता है। जिसमें व्यक्ति सकारात्मक एवं नकारात्मक अनुभव अपने स्व के सामर्थ्य के प्रति परिलक्षित करता है। इन्होंने आत्म-सम्मानके दो पहलुओं के बीच अंतर की व्याख्या की है। जिसमें प्रथम शील गुण आत्म-सम्मान है। जो किसी विशेष कार्यदायी क्षेत्र या संगठन में व्यक्ति की क्षमता, योग्यता एवं विश्वास के द्वारा प्रदर्शित होता है। जबकि वैश्विक आत्म-सम्मान है जिसमें व्यक्ति एक आंतरिक योग्यता एवं पात्रता रखता है। जो किसी विशेष क्षमता और गुण के रूप में हो सकता है।

आत्म-सम्मान अभिवृत्तियों का समूह या समुच्चय होता है जो अपने स्व के प्रत्यक्षणों, विचारों, मूल्यांकनों, अनुभवों, संवेगों और व्यावहारिक प्रकृति पर आधारित होता है। अर्थात् अपने स्व के प्रति मूल्यांकन का प्रत्यक्षण ही आत्म-सम्मान है। आत्म-सम्मान विद्यार्थी के मानसिक एवं सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण तत्व होता है। स्वस्थ आत्म-सम्मान सकारात्मक स्व सक्षमता की भावना को विकसित करता है। जो प्रसन्नता, खुशी और आत्म स्वीकृति के द्वारा प्रदर्शित होती है। इसमें आत्म संकल्पना का मूल्यांकन सम्मिलित होता है और अक्सर हमारे यथार्थ क्षमताओं से संबंधित होता है। हम अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आत्म-सम्मान के विभिन्न स्तरों को रखते हैं। प्रत्यक्षीकृत स्व (आत्म संप्रत्य) और आदर्श स्व के बीच का अंतर आत्म-सम्मान की ओर संकेत करता है, **सेलिगमैन पूरके एवं नोवाक (2001)**।

शोध अध्ययन में अकादमिक अभिप्रेरणा एवं आत्म-सम्मान दो भावात्मक चरों को शोधकर्ता द्वारा चयनित किया गया है और इन्हीं के प्रभावों एवं अंतरसंबन्धों के अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा। विद्यार्थी का शैक्षणिक प्रत्यक्षण एवं सांवेगिक अनुभव ही छात्र की स्व अवधारणा का निर्माण करते हैं कि वे किस हद तक शैक्षणिक कार्यों में अपना सर्वश्रेष्ठ करने के लिए अभिप्रेरित रहते हैं। क्योंकि विद्यार्थी शैक्षणिक जांच और प्रयास में भावात्मक पहलू पर ज्यादा ध्यान देते हैं, यह शैक्षिक प्रक्रिया में सूचनाओं को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करते हैं। शैक्षणिक प्रदर्शन एवं उपलब्धि के विचरण में भावात्मक चर अधिक सहसंबन्धित होते हैं। सीखने की परिस्थिति में विद्यार्थी का अनुभव, संवेग, अभिवृत्ति, एवं विश्वास ही महत्वपूर्ण होता है, और यह सभी अभिप्रेरणा के स्रोत हैं। अकादमिक अभिप्रेरणा एवं आत्म-सम्मान विद्यार्थियों के व्यक्तिगत अभिरुचि एवं कौशल को बढ़ाता है, जिससे वह जीवन की विभिन्न परिस्थितियों जैसे विद्यालय परिवार एवं समाज से संबंधित चुनौतियों का अधिक सफलतापूर्वक सामना कर सके।

शोध का महत्व

वर्तमान समय में समाज के सभी वर्गों के लोग शिक्षा के प्रति अपने पूर्वाग्रहों से बाहर निकलकर स्वयं और अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिए वचनबद्ध हो रहे हैं। ऐसे में आवश्यकता है कि शिक्षा के विभिन्न पहलुओं और निर्धारकों का गहनता से अध्ययन किया जाए। क्योंकि शिक्षा का अर्थ विद्यार्थी को जीवन एवं इसके उद्देश्यों के समझने की योग्य बनाता है न कि किसी विषयगत जानकारी को प्राप्त कर लेना। विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास ही शिक्षा के मूल में है। अब

तक हुए शोध कार्य में शिक्षा के विभिन्न कारकों की बात की गई है। जिसमें सबसे अधिक शिक्षा एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का संबंध केंद्र में रहा है। प्रस्तुत शोध अकादमिक अभिप्रेरणा पर आत्म-सम्मानके प्रभाव का अध्ययन जिसमें विद्यार्थी के आत्म-सम्मानके द्वारा शिक्षा के प्रति उनकी अकादमिक अभिप्रेरणा को उजागर करने का प्रयास किया गया है। परंतु क्या शिक्षा में विद्यार्थी की उपलब्धि अभिप्रेरणा ही शैक्षिक सफलता एवं प्रदर्शन का एकमात्र निर्धारक है? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। यदि शैक्षिक इतिहास एवं दर्शन की दृष्टि से देखे तो दो प्रश्न उभरकर सामने आते हैं पहला क्या विद्यार्थी सीखना चाहता है? दूसरा विद्यार्थी क्या सीखना चाहता है? पहले प्रश्न के उत्तर का निर्धारण विद्यार्थी का आत्म-सम्मान (अपनी क्षमता एवं योग्यता में विश्वास) करेगा तथा दूसरे प्रश्न का उत्तर का निर्धारण विद्यार्थी की शैक्षिक अभिप्रेरणा (चयनित विषय में क्षेत्र के प्रति उसकी अभिरुचि, आवश्यकता, लक्ष्य, उन्मुखता एवं प्रेरणा शक्ति) करेगा।

शोध का उद्देश्य

1. विद्यार्थियों के आत्म-सम्मानके विकास में अकादमिक अभिप्रेरणा की भूमिका का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों के अकादमिक सफलता के लिए उनके अकादमिक अभिप्रेरणा की भूमिका का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न-

1. आत्म-सम्मान एवं अकादमिक अभिप्रेरणा स्वतंत्र रूप से तथा सम्मिलित रूप से सरकारी एवं निजी शिक्षण संस्थान के विद्यार्थियों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?
2. विद्यार्थियों के अकादमिक अभिप्रेरणा से उनके आत्म-सम्मान पर क्या प्रभाव पड़ता है?
3. आत्म-सम्मान एवं अकादमिक अभिप्रेरणा के मध्य सह संबंध ज्ञात करना?

परिकल्पना-

1. अकादमिक अभिप्रेरणा के विभिन्न आयामों पर शिक्षण संस्थान एवं लिंग भेद का प्रभाव पड़ता है।
2. अकादमिक अभिप्रेरणा विभिन्न आयामों एवं आत्म-सम्मान पर शिक्षण संस्थान और लिंग भेद का प्रभाव पड़ता है।
3. आंतरिक अभिप्रेरणा, बाह्य अभिप्रेरणा, अभिप्रेरणाविहीन तथा आत्म-सम्मान के बीच सहसंबंध पाया जाता है।